किशोरावस्था : जीवन का सबसे कठिन काल
(ADOLESCENCE : THE MOST DIFFICULT PERIOD OF LIFE)

किशोरावस्था वह समय है जिसमें किशोर अपने को वयस्क समझता है और वयस्क उसे बालक समझते हैं। वयसंधि की इस अवस्था में किशोर अनेक बुराइयों में पड़ जाता है।

ई. ए. किर्कपैट्रिक (E. A. Kirkpatric) का कथन है—**"इस बात पर कोई मतभेद नहीं हो सकता है कि किशोरावस्था जीवन का सबसे कठिन काल है।"** इस कथन की पुष्टि में निम्नलिखित तर्क दिये जा सकते हैं—

(1) इस अवस्था में अपराधी-प्रवृत्ति अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच जाती है और नशीली वस्तुओं का प्रयोग आरम्भ हो जाता है।

(2) इस अवस्था में समायोजन न कर सकने के कारण मृत्यु-दर और मानसिक रोगों की संख्या अन्य अवस्थाओं की तुलना में बहुत अधिक होती है।

(3) इस अवस्था में किशोर के आवेगों और संवेगों में इतनी परिवर्तनशीलता होती है कि वह प्राय: विरोधी व्यवहार करता है जिससे उसे समझना कठिन हो जाता है।

(4) इस अवस्था में किशोर अपने मूल्यों, आदर्शों और संवेगों में संघर्ष का अनुभव करता है, जिसके फलस्वरूप वह अपने को कभी-कभी द्विविधापूर्ण स्थिति में पाता है।

(5) इस अवस्था में किशोर, बाल्यावस्था और प्रौढ़ावस्था—दोनों अवस्थाओं में रहता है। अत: उसे न तो बालक समझा जाता है और न प्रौढ़।

(6) इस अवस्था में किशोर का शारीरिक विकास इतनी तीव्र गति से होता है कि उसमें क्रोध, घृणा, चिड़चिड़ापन, उदासीनता आदि दुर्गुण उत्पन्न हो जाते हैं।

(7) इस अवस्था में किशोर का पारिवारिक जीवन कष्टमय होता है, क्योंकि स्वतन्त्रता का इच्छुक होने पर भी उसे स्वतन्त्रता नहीं मिलती है और उससे बड़ों की आज्ञा मानने की आशा की जाती है।

(8) इस अवस्था में किशोर के संवेगों, रुचियों, भावनाओं, दृष्टिकोणों आदि में इतनी अधिक परिवर्तनशीलता और अस्थिरता होती है, जितनी उसमें पहले कभी नहीं थी।

(9) इस अवस्था में किशोर में अनेक अप्रिय बातें होती हैं, जैसे—उद्दण्डता, कठोरता, भुक्खड़पन, पशुओं के प्रति निष्ठुरता, आत्म-प्रदर्शन की प्रवृत्ति, गन्दगी और अव्यवस्था की आदतें एवं कल्पना और दिवास्वप्नों में विचरण।

(10) इस अवस्था में किशोर को अनेक जटिल समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जैसे—अपनी आयु के बालकों और बालिकाओं से नये सम्बन्ध स्थापित करना, माता-पिता के नियन्त्रण से मुक्त होकर स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करने की इच्छा करना, योग्य नागरिक बनने के लिए उचित कुशलताओं को प्राप्त करना, जीवन के प्रति निश्चित दृष्टिकोण का निर्माण करना एवं विवाह, पारिवारिक जीवन और भावी व्यवसाय के लिए तैयारी करना।